

ΙΛΙΑΔΟΣ Α

Μῆνιν ἄειδε θεὰ Πηληϊάδεω Ἀχιλῆος
οὐλομένην, ἣ μυρὶ Ἀχαιοῖς ἄλγε' ἔθηκε,
πολλὰς δ' ἰφθίμους ψυχὰς Ἄϊδι προΐαψεν
ἡρώων, αὐτοὺς δὲ ἑλώρια τεῦχε κύνεσσιν
οἰωνοῖσί τε πᾶσι, Διὸς δ' ἐτελείετο βουλή,
ἐξ οὗ δὴ τὰ πρῶτα διαστήτην ἐρίσαντε
Ἄτρεΐδης τε ἄναξ ἀνδρῶν καὶ δῖος Ἀχιλλεύς.

Π μήν, *δορ.* μάν (*ā*), *εολ.*-*ιον.* μείς, *gen.* μηνός ὁ (*δορ. dat. pl.* μασί) 1) месец: τοῦ μηνός Xen., ἐκάστου μηνός Plat., τοῦ μηνὸς ἐκάστου Arph. *u* κατὰ μῆνα (ἕκαστον)
μήνη, *δορ.* μήνα ἢ луна (ἢ νύκτερος μ. Aesch.; σέλας μήνης Hom.).

Ι μήν, *δορ.* μάν (*ā*) (*intens. na* μέν) 1) (да,) 2) нали

μῆνις, *δορ.* μᾶνις, **ιος**, *κῶσνο* **ιδος** ἢ гнев, негодование, злоба (Διός Hom.; βαρεῖα Soph.).

μηνίσκος ὁ [*demin. na* μήνη] 1) “месецообразен” навес, козирка (за *защита на статуя*) Arph.; 2) *воен.* сърповиден (дъгообразен) строй, полукръг Polyb.;

αἶδω, *контр.* ἄδω (*ā*, *in crasi* сѣω *ā*; *fut.* ἄσομαι - *en.* сѣω αἶσομαι - *редко* αἶσω *u* ἄσω, *δορ.* ἄσεῦμαι *u* ἄσῶ, *impf.* ἦδον - *en.* ἦειδον *u* ἄειδον, *aor.* ἦσα - *en.* ἄεισα *u* ἄεισον; *aor. pass.* ἦσθη) 1) пeя

ὄλλῶμι (3 л. *pl. praes.* ὄλλῶσι *u* ὄλλῶσι; *impf.* ὄλλῶν *u* ὄλλων - *en. iter.* ὄλεσκον; *fut.* ὄλῶ - *ιον.* ὄλέω, *en.* ὄλέσ(σ)ω; *aor.* ὄλεσα - *en.* ὄλεσ(σ)α *u* ὄλεσσα; *part. aor.* ὄλέσας - *εολ.* ὄλέσαις; *pf.* 1 ὄλώλεκα, *pf.* 2 ὄλωλα, *ppf.* ὄλωλέκειν *u* ὄλώλειν - *en.* ὄλώλειν; *med.:* *fut.* ὄλοῦμαι - *en.-ιον.* ὄλέομαι; *ιον. part. fut.* ὄλεύμενος; *aor.* 2 ὄλόμην - *en.* ὄλόμην; *en. part.* οὐλόμενος; *pf.* 2 = *act.* ὄλωλα) 1) погубвам , убивам

ἀπ-ὄλλῶμι (*pf.* 1 ἀπολώλεκα) 1) погубвам , унищожавам (πόλιν Hom., Plut.; λαὸν Ἀχαιῶν Hom.): ἀπολεῖς με Arph. ще ме уморишоῖ ἀπολλύντες Soph. убийци;

ἀπολλύω Thuc., Arst. = ἀπόλλυμι.

ἄλγος, **εος** τό (*πρεимуц. pl.*) 1) болка , страдание, мъка Hom., Trag., Plut.: ἔχεσθαι ἄλγεσι Hom. мъча се , страдам; 2) печал Hom., Trag.: θάνατον λαβεῖν ὑπ' ἀλγέων Eur. умирам от мъка

τίθημι (*impf.* ἐτίθην, *aor. 1 sing. ind.* ἔθηκα, *aor. 2 pl.* ἔθεμεν, *fut.* θήσω, *pf.* τέθεικα, *ppf.* ἔτεθεικέν; *praes. conjct.* τιθῶ, *aor. 2 conjct.* θῶ; *praes. opt.* τιθείην, *aor. 2 opt.* θείην; *praes. imper.* τίθει, *aor. 2 imper.* θές; *praes. inf.* τιθέναι, *aor. 2 inf.* θεῖναι; *part. praes.* τιθείς, *part. aor. 2* θείς; *med.:* *praes.* τίθεμαι, *impf.* ἐτιθέμην, *aor. 2 ἐθέμην*; *praes. conjct.* τιθῶμαι, *praes. aor. 2* θῶμαι; *praes. impf. opt.* τιθείμην, *aor. 2 opt.* θείμην; *praes. imper.* τίθεσο, *imper. aor. 2* θοῦ; *praes. inf.* τίθεσθαι, *aor. 2 inf.* θέσθαι; *part. praes.* τιθέμενος, *part. aor. 2* θέμενος; *med.-pass.:* *pf.* τέθειμαι, *ppf.* ἔτεθειμην; *pass.:* *fut.* τεθήσομαι, *aor. 1* ἐτέθην, *adj. verb.* θετός) *съμο med. 1) поставям 2) причинявам* (ἄλγεά τιτι Hom.; πῆμα ἑαυτῷ Soph.; βλάβην Aesch.);

I τιθέω *uon.* (= τιθῶ) *praes. conjct. na* τίθημι

II *τιθέω = τίθημι.

πολύς, πολλή, πολύ (ῥ) (*gen.* πολλοῦ - *en.* πολέος, πολλῆς, πολλοῦ, *pl.* πολλοί, πολλαί, πολλά - *en.* πολέες, *контр.πολεῖς, πολέα; compar.* πλείων, πλείον *u* πλέων, πλέον, *superl.* πλεῖστος 3) 1) многочислен

ἴφθιμος 3 u 2 [ἴφι] 1) силен, мощен, могъщ (ῶμοι, κράτος, Λύκιοι, βοῶν κάρηνα Hom.; ἀνήρ Hes.); 2) мощен, стремителен (ποταμοί Hom.); 3) властен, страшен (Ἄϊδης Hom., Hes.; βασιλεύς Theocr.); 4) доблестен, славен (ψυχαὶ ἠρώων, ἄλοχος Hom.).

προ-ἰάπτω низвергвам захвърлям долу (φυχὰς ἠρώων Ἄϊδι Hom.).

ἦρως, *gen.* ἦρωος (*gen.* понякога с ω кратко, рядко ἦρω) ὁ (*dat.* ἦρῳ - *poem.* ἦρω, *acc.* ἦρω - *en.* ἦρωα, *uon.* ἦρων, *acc. pl.* ἦρωες *u* ἦρωας) 1) вожд, военначалник, предводител (ἦρωες Ἀχαιοί Hom.); 2) воин, боец (στίχες ἀνδρῶν ἠρώων Hom.); 3) славен мъж (Μούλιος ἦ., κῆρυξ Δουλιχειεύς Hom.); 4) Δημόδοκος Hom. знаменит (певец) Демодок; 4) герой,

ἔλωρ τό (*тол ко ном. u acc. sing. u pl.*) плячка, *преимуц.* труп, Aesch., Soph.: θήρεσσιν ἔ. γενέσθαι Hom.; Πατρόκλοιο ἔλωρα ἀποτίνειν Hom. отплащам за труп (*m. e.* за убийството на) Патрокъл.

ἔλωρια τά Hom. = ἔλωρ.

τεύχω (*fut.* τεύξω, *aor.* ἔτευξα - *en.* τεῦξα, *pf.* τέτευχα, *en. aor. 2* τέτυκον - *inf.* τετύκεῖν; *pass.:* *fut.* 3 τετεύξομαι, *aor.* ἐτύχθην *u* ἐτεύχθην, *pf.* τέτυγμα - *en.* 3 л. *pl.* τετεύχασθαι, *ppf.* ἐτετύγμην - *en.* 3 л. *pl.* τετεύχασθαι) 1) строя, съоръжавам, издигам (δώματα, νηὸν Ἥελίῳ Hom.); 2) изготвям, правя

(θώρηκα, εἴματα τετυγμένα χερσὶ γυναικῶν Hom.): ἐπίτονος ῥινοῖο τετευχῶς (so *знач. pass.*) Hom. ремък изготвен от кожа;

τεῦχος, εος τό 1) *pl.* оръжие, въоружение, доспехи Hom., Soph.); погребална урна Aesch., Soph.; 5) избирател на урна Aesch.; 6) съд (за възлияние Aesch., Eur.; 7) съд (за вода) Eur.; 8) список, книга Anth.

τελέω, en. същю τελείω (*fut.* τελέσω - *en.* τελέσσω и τελέω, *att.* τελῶ, *aor.* ἐτέλεσα - *en.* ἐτέλεσσα, *pl.* τετέλεκα; *pass.:* *aor.* ἐτέλεσθην, *pf.* τετέλεσμαι) 1) свършвам (τι, τετέλεστο ἔργοι Hom.): τελέσαι δόμον Theocr. построявамт дом; τελέσασθαι δίκην Dem. довеждам съдебно дело до край; 2) извършвам, (ιέρα Eur.): τ. ἀέθλους Hom. сражат ся; νόμους σώζοντα τὸ

τέλος, εος τό *същю pl.* 1) свършване, завершване, изпълнение: τ. γάμοιο Hom. встъпване в брак, бракосъчетание; исполнения); πρὶν τ. τι ἔχειν Thuc. прежде, чем что-л. будет приведено в исполнение; 2) резултат, последствия, изход

δι-ίστημι (*fut.* διαστήσω, *aor.* 1 διέστησα; *для неперех. знач. - aor.* 2 διέστην, *pf.* διέστηκα, *ppf.* διειστήκειν) 1) разполагам
2) отстоя, разделям се,

Ἔρις, ιδος ἡ Ерида (*богиня раздора, сестра и спътница на Арес Hom.; дъщеря на Ноцта Hes.*).

ἐρίζω (*en. impf. iter.* ἐρίζεσκον, *aor.* 1 ἤρισα и *en.* ἔρισ(σ)α) *същю med.* 1) споря, карам се (τινί Hom.; πρὸς τινα Pind., Her., Plat.; τινὲ περί τινος Xen.,

ἄναξ, ἄνακτος (ἄν) ὁ *рядко ἡ* (*ppf.* ἄναξ и ἄνα) 1) повелител, владика (ἄ. Ἀπόλλων Hom., Aesch.; ἄνακτες θεοί Pind.); 2) предводител, вожд, началник, глава (ἄνδρῶν Hom.; Μενέλαος Aesch.); 3) стопанин, господар (οἴκοιο Hom.)

ИЛИАДА

ПЪРВА ПЕСЕН

ЧУМАТА ГНЕВЪТ

Музо, възпей оня гибелен гняв на Ахила Пелеев,
който донесе безбройни беди на войските ахейски,
прати в подземното царство душите на много герои,

тях пък самите предаде за плячка на стръвните псета,
5. пир за грабливите птици. Тъй волята Зевсова стана,
след като в свада жестока се скараха и се разделиха
мощният цар Агамемнон и вождът Ахил богоравен.
Кой от безсмъртните беше ги хвърлил към грозната разпра?
Богът, потомък на Лета и Зевса. Разсърден на царя,
10. болест коварна изпрати сред стана и мряха войските,
тъй като цар Агамемнон обидил бе жреца му Хриза.
Старият Хриз бе дошъл при ахейските кораби бързи
с откуп богат да измоли от плен дъщеря си любима.
Носеше той във ръка златен жречески жезъл с венеца
15. на Аполон далекострелец и молеше всички ахейци,
най-много двамата братя Атриди, водачи военни:
"Вие, Атриди, и другите медноколенни ахейци!
Нека дадат боговете, които Олимп обитават,
да разрушите града на Приам и се върнете здрави!
20. Щерката вий ми пуснете и откуп вземете за нея,
тъй почетете сина на Кронид, Аполон далномерец!"
И съгласиха се с радостни възгласи всички ахейци
почит на Хриз да окажат и откупа скъп да приемат.
Само на цар Агамемнон това на сърце не допадна.

HOMERI POETAE CLARISSIMI ILIAS PER LAVRENTIVM VALLENSEM
ROMANVM

e graeco in latinum translata et nunc accuratissime emendata

Liber I

cui accedit

eiusdem libri I textus graecus

Scripturus ego quantam exercitibus Graiis cladem excitaverit
Achillis furens indignatio, ita ut passim aves feraeque cadaveribus
heroum ac principum pascerentur, te, Calliope, vosque aliae
sorores, sacer Musarum chorus, quarum hoc munus est proprium
et quae vatibus praesidetis, invoco oroque, ut haec me edoceatis,
quae mox docere ipse alios possim: primum, quaenam origo
indignationis
ac materia fuit (nempe Achillis controversia cum
summo Graecorum principe Agamemnone); deinde quis inter
hos deus controversiam excitavit (Apollo Iovis et Latonae filius);
postremo quis Graios ipsos eo calamitatis ob hanc indignationem

devenire permisit (Iovis deorum summi voluntas atque consilium).

Haec igitur, quomodo gesta sunt, latius exequamur.

Controversia autem inter Agamemnonem atque Achillem hinc originem sumpsit, Apolline praebente materiam. Erat eiusdem dei sacerdos quidam ex Chrysa insula, et ipse Chryses nomine, unicae iam adultae pater, quam et patriae et patris nomine Chryseidam appellavit. Hanc Graeci, cum Thebas everterent, finitimaque loca diriperent, captam ut summo rege dignam vel dono vel in suam portionem obtulerunt. Ubi autem ad Troiam redierant, non ita multo post, ecce pater Chryses cum ingentibus donis redimendae filiae gratia, praefereus manu aureum sceptrum, coronis Phoebi vittisque redimitum, adiensque Graecos principes, praecipueque Agamemnonem ac Menelaum, huiusmodi illos verbis obsecravit: